बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में आयोजित
''दीपावली उत्सव'' में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन
(दिनांक 01 नवम्बर, 2015)

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला जी, वरीय उपाध्यक्ष श्री विनोद तोंदी जी, महामंत्री श्री ओ0पी0 तिबड़ेवाल जी, संस्था के अन्य पदाधिकारीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, बहनों एवं भाइयों।

आज आपने 'दीपावली उत्सव' आयोजित करते हुए मुझे आमंत्रित किया है, इसके लिए आपको धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मित्रों, भारतीय संस्कृति और वांगमय में बराबर अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर होने की मंगलकामना की गई है। असत्य से सत्य की ओर, दुराव से सद्भाव की ओर तथा कटुता से प्रेम की ओर अभिमुख होने की ओर हमारी यही लालसा और प्रवृत्ति हममें आदर्श मानवीयता का स्वप्न और संकल्प जगाती है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, असदो मा सद्गमय, मृत्योर्मामृतम् गमय'– की हमारी शुभकामना ही हममें मानवता का उज्ज्वल दिव्य प्रकाश भरती है। 'दीपावली' हमारी इन्हीं मंगलकामनाओं का प्रतीक–पर्व है।

इस त्योहार से जुड़ी अन्य कई धार्मिक एवं ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। इसीदिन नृसिंह का अवतार लेकर विष्णु ने प्रह्लाद की रक्षा की, समुद्र–मंथन से लक्ष्मी प्रकट हुईं – इन सारी बातों से आप अवगत होंगे। जैन मतके अनुसार, तीर्थंकर महावीर का महानिर्वाण–दिवस दीपावली का दिन ही माना जाता है। लंकेश रावण पर विजय प्राप्त करने के बाद, प्रभु श्रीराम की अयोध्या–वापसी का भी यही उल्लास–दिवस है। ऐतिहासिक तथ्य ये बताते हैं कि सिखों के छठे गुरू हरगोविन्द सिंह जी इसी दिन औरंगजेब की कारा से मुक्त हुए थे। राजा विक्रमादित्य के सिंहासनारूढ़ होने का भी पावन दिन यही है। प्रसिद्ध वेदान्ती स्वामी रामतीर्थ, आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद तथा सर्वोदयी नेता आचार्य विनोबा भावे को इसी दिन

मोक्ष–प्राप्ति हुई थी। इतनी महत्त्वपूर्ण स्मृतियों को अपने हृदय में संजोये 'दीपावली' हर वर्ष हमारे जीवन में आती है। दीपावली हमारे जीवन में हर वर्ष खुशियों की मिठास घोल जाती है, सुख और समृद्धि की चेतना जगा जाती है, मानवीयता और नैतिकता की निष्ठा पिरो जाती है।

किन्तु, आज मैं एक दूसरी बात की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। मित्रों, अपने सुख और आनंद की कामना करते समय क्या यह आवश्यक नहीं कि हम अपने मुहल्ले के, अपने समाज के ही उस गरीब–परिवार की भी सुधि लें, जो सुबह–शाम दो–चार रोटियों के लिए मोहताज है। समाज के दीन–हीन, वंचित और दुःखी जन, जबतक समाज में संतुष्ट नहीं होंगे, हमारा समाज समरस समाज नहीं कहलाएगा। एक समरस समाज से ही कोई भी प्रदेश व राष्ट्र सशक्त और समृद्ध बन सकता है। मित्रों, सुप्रसिद्ध कवि नीरज की पंक्तियाँ मुझे याद आ रही हैं–

''बहुत बार आई गई यह दीवाली
मगर तम जहाँ है, वही पर खड़ा है,
दीये से मिटा है न मन का अँधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ।''

–मित्रों, कवि नीरज जी ने 'धरा' को उठाने और 'गगन' को झुकाने की जो बात कही है, उसका मतलब यही है कि गरीबी मिटाने के लिए अमीरों में उदारता और त्याग–भावना को विकसित किया जाना चाहिए।

मुझे बताया गया है कि आपकी संस्था समाज–कल्याण के लिए कई महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। आपकी संस्था के अधीन शिक्षा समिति, चिकित्सा–सेवा–समिति, महिला मंच, युवा मंच जैसे अनुषंगी दल शिक्षा, स्वास्थ्य, नारी–उत्थान और युवाओं के विकास के लिए कई कल्याणकारी कार्य रहे हैं, यह संतोष की बात है। आज के इस कार्यक्रम के जरिये आप अपनी राजस्थानी संस्कृति की रंगीनी, सद्भावना और कलात्मकता को अपने बिहारी भाई–बहनों के बीच

प्रस्तुत कर रहे हैं – यह एक प्रशंसनीय बात है। इससे अपने देश की बहुवर्णी सभ्यता, संस्कृति, रहन–सहन और कलात्मकता को व्यापक आयाम मिलता है, विस्तार मिलता है।

आज पुरस्कार पानेवाले सभी लोगों को मैं बधाई देता हूँ तथा यह अनुरोध करता हूँ कि आइये ! हम सभी एक सशक्त, समृद्ध, समुन्नत और सद्भावमय प्रान्त और देश के नवनिर्माण के लिए दृढ़ संकल्पित हों। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।